Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 6 ~ Issue 11 (2018) pp: 109-111
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

रामायण आज के संदर्भ में

डॉ० रवीन्द्र त्रिपाठी

प्रधानाचार्य

अमर सिह उच्चतर माध्यमिक विघालय बढया चौक गोरखपुर

भारत में सर्वप्रथम आयोजित अंतरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में सोवियत रूस के प्रमुख हिंदी विद्वान् डॉ. इवजेनी चेलीशेव ने अयोध्या में उद्घाटन भाषण हिंदी में देकर उपस्थित जन समूह को आत्म-विभोर कर दिया! सम्मेलन में देश-विदेश के अनेक विद्वानों के साथ मानस संगम के संयोजक भी उपस्थित थे। हम यहाँ प्रबुद्ध पाठकों के लिए डॉ. चेलीशेव का भाषण अविकल प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत की शास्त्रीय परंपरा अपनी अतिविशालता, अपनी उन कलाकृतियों तथा साहित्यिक रचनाओं की महानता से हमें आश्चर्यचकित कर देती है, जो अति प्राचीन काल से अपनी स्पष्ट बिंब-योजना, नाना रूप और सूक्ष्म रंग-योजना को लिये हुए हम तक पहुँची है। यह हमारे मन को सौंदर्यानुभूति, अस्तित्व तथा आनंददायक बोध से आप्लावित कर देती है और हमें अपने अक्षय जीवन-शक्ति-स्रोत, उदात्तता तथा उच्च आदर्शों से प्रेरित करती है। इस परंपरा का आधार प्राचीन भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत हैं, जो समूचे भारतीय शास्त्रीय साहित्य के विकास का और पुरातन युगों से लेकर आज तक के असंख्य भारतीय कवियों तथा विचारकों को प्रेरणा देनेवाले अक्षय स्रोत हैं। रामायण तथा महाभारत को 'मनुष्य के जीवन का संरचना का अंग' बताते हुए जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि उनकी प्रत्येक घटना तथा कहानी और उनकी शिक्षा जनमानस पर अंकित हो चुकी है और उसे समृद्धि तथा संतोष प्रदान करती है। इन महान् भारतीय महाकाव्यों के महत्त्व को इससे अधिक संक्षेप में अभिव्यक्त करना असंभव है, जितना नेहरू ने किया है, "मैं कहीं भी ऐसी किसी पुस्तक के बारे में नहीं जानता, जिसने इन दो पुस्तकों की भाँति जनमानस को इस प्रकार निरंतर और व्यापक रूप से प्रभावित किया हो। अति प्राचीन होते हुए भी वे आज भी भारतीय लोगों के जीवन में शक्ति का संचार करते हैं।"

रामायण और महाभारत का प्रभाव भारत की सीमाओं को लाँघकर दूर-दूर तक चला गया है। विश्व-संस्कृति के शोधकर्ताओं ने प्रायः यह कहा है कि जिस प्रकार इलियड और ओडिसी यूरोप के लिए है, उसी प्रकार रामायण और महाभारत पूरे मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए है। एशिया के अनेक भागों में पहुँचकर इन महाकाव्यों ने केवल साहित्य के विकास को ही नहीं, अपितु कला, संस्कृति तथा विचारधारा के विकास को भी प्रेरित किया। भारत में धर्मग्रंथ मानी जानेवाली ये पुस्तकें धार्मिक तथा दार्शनिक सिद्धांतों और नैतिक आदर्शों के निर्माण में उत्प्रेरक तत्त्व का काम करते हुए राष्ट्रीय सांस्कृतिक परंपरा का क्रीड एवं सारतत्त्वबनीं।

इन दो प्राचीन भारतीय महाकाव्यों में सभी कुछ एक जैसा होते हुए भी उनमें कुछ मौलिक अंतर है। इंदिरा गांधी के शब्दों में—'दोनों महाकाव्यों में से रामायण बहुत अधिक लोकप्रिय है, शायद इस कारण कि वह आसानी से समझ में आ जाती है।' प्राचीन भारतीय साहित्य में एक सोवियत शोधकर्ता पी.ए. ग्रिब्स्टर ने सत्य ही कहा है कि 'महाभारत की तुलना में रामायण का विन्यास निश्चय ही बिल्कुल भिन्न है और वह पाठक को एक दूसरी दुनिया में बहा ले जाता है। उन्होंने रामायण की उन

विशिष्टताओं का भी उल्लेख किया है, जिसे परिमार्जित भावात्मक वातावरण, नैतिक विशुद्धता, आभिजात्य तथा विश्वासपूर्ण प्रेम कहते हैं।

रामायण के संबंध में अनेकानेक विद्वत्तापूर्ण कृतियों की रचना की जा चुकी है। मेरे साथी वी. लिपेरोव्स्की ने इस संबंध में उल्लेख किया है कि सोवियत संघ में किस प्रकार इसका अध्ययन, इसका मूल्यांकन तथा इसका प्रचार किया जाता है। इसी प्रवृत्ति की एक प्रासंगिक कृति एशिया में रामायण परंपरा का प्रकाशन भारत में सन् १९८० में हमारे मित्र स्वर्गीय प्रोफेसर वी. राघवन के संपादकत्व में हुआ, जो दिल्ली में १९७५ में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित एक सेमिनार का परिणाम था।

यद्यपि दार्शनिक तथा सौंदर्य-विषयक परिप्रेक्ष्य में रामायण एक युग विशेष का प्रतिनिधित्व करती है और उस काल-बिंदु पर जो सामाजिक तथा कलात्मक विकास का स्तर या उसी को वह परिलक्षित करती है, तो भी इस महाकाव्य को मात्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परखा नहीं जा सकता, क्योंकि इसका अब भी समकालीन भारत में साहित्यिक प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव है और पाठकों तथा श्रोताओं को अत्यधिक प्रभावित करती है।

रामायण के नायक अब भी श्रेष्ठ मानवीय गुणों के अवतार हैं और उनके प्रतिवादी पात्र घोर पापाचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। रामायण के नायकों के मनोभाव तथा कष्ट जनसामान्य की समझ में आनेवाले हैं। वे उन्हीं के जैसे सिद्धांतों को आदर्श मानते हैं और आशा-आकाक्षाओं की कामना करते हैं। यही कारण है कि वे भारतीय लोगों के हृदयों में बसे हुए हैं। रामायण के मुख्य तथा गौण पात्रों के नैतिक मानदंड बहुत ऊँचे हैं और वे अनुकरण के लिए सयोग्य उदाहरण बन सकते हैं। कुल मिलाकर काव्य में राम किसी देवता के रूप में नहीं आए हैं, अपितु एक मानव के रूप में उनकी सभी सांसारिक भावनाओं और चिंताओं के साथ आए हैं। वे एक आदर्श शासक और वीर योद्धा का प्रतिनिधित्व करते हैं और भलाई एवं न्याय धारणा के अधीन रहते हैं। सच्चरित्र जीवन-संगिनी सीता अपने पति के प्रति निष्ठावान बनी रहने के लिए किसी भी प्रकार की परीक्षा देने को उद्यत हैं। लक्ष्मण अपने परम प्रिय भाई के लिए, जो दुर्भाग्यचक्र में घिर गया है, आत्म-बलिदान करने को तत्पर हैं। हनुमान राम के विश्वासपात्र, स्वामीभक्त, सखा तथा सहायक हें, इत्यादि।

हम रामायण की मानवतावादी विशेषता की सार्थकता इसी में मानते हैं कि आधुनिक विश्व इसका भावी चित्र बनकर शांति और न्याय के लिये प्रयास करे और इस धरती पर मनुष्य के जीवन में सुख-समृद्धि व्याप्त हो जाए। यह महाकाव्य इस मत की पुष्टि करता है कि सुख प्राप्त करने का भरसक प्रयास करना चाहिए और अभिजात लक्ष्यों के लिए लड़ना चाहिए। महाकाव्य रूप में रामायण के अंदर पाप तथा पुण्य के बीच संघर्ष और अंधकार पर प्रकाश की निर्णायक विजय, पाप तथा हिंसा की शक्तियों पर धर्म तथा न्याय की विजय में विश्वास के विचार को प्रतिपादित किया गया है। आज इतनी शताब्दियों के बाद भी यह पराक्रम के कमाल दिखाने के लिए लोगों को प्रेरित करती है और उनमें विजय के प्रति विश्वास को पक्का करती है।

भारत में रामायण के प्रति रुचि उसके इतिहास के संकट की घड़ियों के दौरान बढ़ी, जब लोगों को अपने उच्च आदर्शों की अत्यधिक आवश्यकता थी। यूरोपीय पुनर्जागरण के अग्रणियों की भाँति, जिन्होंने प्राचीनता पर पुनर्विचार किया। तुलसीदास ने भी अन्य भक्त कवियों की भाँति रामायण के आख्यान के रूपक तथा कथानक का सहारा लेते हुए, क्योंकि लोग उससे भलीभाँति परिचित थे—अपने विचारों का प्रचार करते हुए अपने देश की प्राचीनता में प्रयाण के महत्त्व को समझाया। परंतु उन्होंने केवल महाकाव्य की परंपराओं की ओर अत्यावर्तन नहीं किया, अपितु उन्हें नई ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप ढाल दिया। तुलसीदास, एकनाथ, कृत्तिवास तथा अन्य भक्त कवियों द्वारा रचित मध्ययुगीन रामायणों में भारत की विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों में आत्म-बलिदान के विचार को सर्वजन हिताय के साथ जोड़ने का प्रयास मिलता है।

उदाहरणार्थ अनेक शोधकर्ताओं को रामचरितमानस में यह लक्षण मिला है। सुप्रसिद्ध हिंदी गद्य-लेखक रांगेय राघव के शब्दों में, तुलसीदास की यह रचना अत्याचार के विरुद्ध जन-जागरण का काम करती है। उनकी रचनाओं में राम, जो भगवान् विष्णु के अवतार हैं, स्वयं अपने और जनता के सुख के लिए संघर्ष करते हैं। क्रूरता के विरुद्ध लड़ते हैं, न्याय को पुनर्स्थापित करने के लिए दुष्टता को नष्ट करते हैं और सार्वभौमिक सुख-समृद्धिवाले राज्य की स्थापना करते हैं। सर्वजन हिताय के स्वप्न से परिपूर्ण मध्ययुगीन रामायण सामंती ब्राह्मणवाद के लिए, अत्याचार तथा हिंसा के लिए, जिसका मध्ययुगीन भारत में बोलबाला था, एक

चुनौती है और उनमें आदर्श राज्य की कुछ विशिष्टताएँ हैं। इसी कारण से सत्ताधारी सामंती वर्ग और पुरातन पंथी ब्राह्मणों द्वारा इन रचनाकारों को प्रायः ही सताया जाता था।

मध्ययुगीन भारत के भक्त-कवियों ने उन जीवंत भाषाओं और उस समय की बोलियों में साहित्य के विकास में मुख्य भूमिका निभाई, जिन्हें आगे चलकर राष्ट्रीय भाषाएँ बनना था।

भारत की जनता की राष्ट्रीय आत्म-चेतना को जाग्रत् करने के प्रयोजन को लेकर रामायण के रूपकों और कथावस्तु की पुनर्रचना की गई और देशभक्त लेखकों द्वारा शिक्षाविदों और धर्म-सुधारकों द्वारा उन्हें वर्तमान राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से जोड़कर एक नया रूप दिया गया। ऐसी कृति का एक उदाहरण है—बंगाली लेखक मधुसूदन दत्त द्वारा रामायण के विषय पर १८६० में प्रकाशित वीर-काव्य 'मेघनाथ वध'। इस काव्य में स्वाधीनता-संग्राम में आत्म-बलिदान और शत्रु पर विजय पाने की खातिर वीरगति पाने के गीत हैं, समकालीन कवियों द्वारा अपनी रचनाओं में पौराणिक कथाओं के प्रयोग की परंपरा को बंगाली साहित्य में रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा असमिया साहित्य में भोला नाथदास द्वारा, उड़िया साहित्य में राधानाथ द्वारा, तेलुगु साहित्य में गुरजादा अप्पाराव द्वारा और हिंदी साहित्य में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त तथा विभिन्न संप्रदायों एवं प्रवृत्तियों के अनेक लेखकों द्वारा जारी रखा जा रहा था। अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष और न्याय की खातिर आत्मबलिदान करने के विचार १९३७ में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'राम की शक्ति पूजा' में लक्षित हुए। चीनी आक्रमण के कठोर समय में रामधारी सिंह दिनकर ने रामायण के मूल भाव पर आंतरिक वीर काव्य 'परशुराम की प्रतीक्षा में' (१९६२) की रचना की। कवि उक्त कथा के महाबली योद्धा का अपने स्वदेश और अपने देशवासियों की सहायता करने तथा शत्रु को मार भगाने के लिए आह्वान करता है।

वर्तमान भारत में जब फूट डालनेवाली शक्तियाँ एकमात्र प्रजातांत्रिक, बहुराष्ट्रीय राज्य के दृढीकरण का विरोध कर रही हैं, एकता और भाईचारे के लिए, प्रतिरोधों, अलगाववाद तथा शत्रुता को मिटाने के लिए रामायण का आग्रह विशेष रूप में उपयुक्त है। जवाहरलाल नेहरू ने प्राचीन भारत में रामायण के समग्र रूप में क्रियाशील होने का उल्लेख किया है, जिसमें विरोधी गतों और चिंतन मार्गों के बीच संश्लेषण लाने का एक और प्रयास किया गया। राम के आख्यान पर आधारित कृतियों ने, जोकि मध्ययुगीन भारत के भिन्न-भिन्न भागों में विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों में लिखी गई, भारतीय साहित्यकारों का परस्पर पुनर्मेल सरल कर दिया और उनके दार्शनिक तथा सौंदर्यपरक बंधनों को पक्का कर दिया।

मूल काव्य अर्थात् आदिकाव्य के रूप में रामायण ने भारतीय काव्य के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात किया। यद्यपि इसका मौलिक परंपरा के साथ अधिक गहरा संबंध है, तो भी वास्तव में एक नव परिवर्तन लानेवाले कवि की छाप की इसमें स्पष्ट अनुभूति होती है। यह महाकाव्य विभिन्न युगों और राष्ट्रीयताओं वाले भारतीय कवियों के लिए ध्रुवतारा बन गया और भारतीय साहित्य की एक बहुराष्ट्रीय समष्टि में संघटित करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

समस्त प्राचीन भारतीय महाकाव्यों की भाँति ही रामायण में भी व्यापक मानवतावादी अंतःशक्ति है, इसमें एक विचारधारा व्याप्त है, जो मानव मात्र के प्रति प्रेम और शांति के सिद्धांतों को प्रतिपादित करती है, दुष्टता की शक्तियों पर सुख-शांति और सर्वजन हिताय की खातिर विजय पाई जा सकती है और पाई जानी चाहिए—यही इस महान् काव्य का मुख्य विचार है।